महादेवी वर्मा - व्यष्टि से समष्टि की यात्रा

अशोक कुमार द्विवेदी
वैज्ञानिक "ब"
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान

पुस्तकालय
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की

वर्ष 2007 एक यादगार वर्ष। ' जल वर्ष ', " नारी शसक्तिकरण वर्ष " अथवा भारतीय परिवेश में अनेकों कीर्तिमानों का वर्ष । जो भी, जिस रूप में हम इसे स्वीकार करें, यह वास्तव में यादगार वर्ष है क्योंकि साहित्य जगत की एक महान महिला ' महादेवी वर्मा ' का यह जन्म शताब्दी वर्ष भी है । प्रस्तुत अंश इस कर्मनिष्ठ महान कवियित्री , साहित्यकार का जीवन परिचय इनके जन्म सदी पर एक सच्ची श्रद्धाजली है । आइए देखें उनके जीवन के कुछ मुख्य अंश जो वास्तव में हिन्दी साहित्य की छायावादी कवियों के साथ अपनी उत्कृष्ट गधांश कृतियों के लिए, उनके सामाजिक सरोकार तथा महिला शसस्तिकरण की पुरोधा के रूप में उनकी व्यष्टि से समष्टि की यात्रा के सोपान ।

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च, 1907 को उत्तर प्रदेश राज्य के फर्रूखाबाद में हुआ था । इनके पिता का नाम श्री गोविन्द प्रसाद वर्मा था, जो भागलपुर, बिहार राज्य के एक कालेज में प्राध्यापक थे । इनकी माता का नाम हेमरानी देवी था । लगभग 200 वर्षो के एक लम्बे अन्तराल अथवा यों कहें कि सात पीढ़ियों के पश्चात इनके परिवार में पहली बार ' पुत्री रत्न ' की प्राप्ति हुई थी यह अनोखा संयोग था । अतः इन्हें घर की देवी अर्थात् ' महादेवी ' के नाम से सुशोभित किया गया ।

महादेवी वर्मा की माताजी जहाँ धर्मपरायण, कर्मनिष्ठ, भावुक एवं शाकाहारी महिला थी, वहीं इसके विपरीत इनके पिता सुन्दर , विद्वान , संगीत प्रेमी , नास्तिक विचार धारा से ओतप्रोत , एक शिकारी तथा देशाटन प्रेमी, मांसाहारी तथा अत्यन्त हँसमुख थे । इन दो विपरीत विचार धाराओं के बीच महादेवी को शायद बचपन में ही अंतर्द्वन्द से जूझना पड़ा होगा, जिसकी छाप उनकी कृतियों पर परिलक्षित होती है ।

साहित्य के क्षेत्र में महादेवी का अभिर्भाव उस समय हुआ जब आज की खड़ी बोली परिष्कृत हो रही थी । उन्होंने जिन सरोकारो से साक्षात्कार किया उनकी रचनाएं उनकी मूक प्रस्तुति हैं ।

महादेवी वर्मा की शिक्षा का प्रारम्भ मध्यप्रदेश के इंदौर के एक मिशन स्कूल से हुई । परन्तु संस्कृत , अंग्रेजी , संगीत तथा चित्रकला का शिक्षण-प्रशिक्षण का प्रबन्ध इनके घर पर ही हुआ । इनका विवाह इनके बाबा श्री बांके बिहारी द्वारा मात्र 12 वर्ष की अल्पायु में बरेली के पास नवाबगंज के निवासी श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कर दिया गया । जब वे

शायद कक्षा 6 की छात्रा रही होंगी और इनके पति दसवीं कक्षा के छात्र थे । महादेवी ने 14 वर्ष की आयु में आठवीं कक्षा प्रान्तीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर अपनी ज्ञान क्षमता का परिचय दे दिया था । विवाह के कारण कुछ समय तक इनकी शिक्षा में कुछ अवरोध आया परन्तु इसके बाद उन्होंने वर्ष 1919 में इलाहाबाद क्रास्थवेट कालेज में प्रवेश लेकर छात्रावास में रहने लगीं । यहीं से उनका नाता इलाहाबाद से जुड़ा जो अब तक कायम रहा ।

इलाहाबाद प्रवास के दौरान ही उनकी रचनाएं उत्कृष्टता का शिखर चूम रही थी । वैसे तो बाल्यावस्था से ही उन्होंने काव्य जीवन की शुरूआत कर दी थी , जब वे मात्र 7 वर्ष की थी । कहते हैं ' होनहार के पाँव पालने में ही दिखाई देने लगते हैं' । एक दूसरी उक्ति भी ' होनहार वीरवान के होत चिकने पात'। अतः उनकी जिज्ञासा एवं विद्वता जीवन के प्रारम्भिक दिनों से ही परिलक्षित होने लगी थी । वर्ष 1925 में उन्होंने जब मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की उस समय वह मात्र 18 वर्ष की थी तथा इस अवधि तक वे कवियित्री के रूप में सफल मुकाम हासिल कर ली थी । विभिन्न पत्र - पत्रिकाओं में उनकी कविताओं का प्रकाशन होने लगा था । इसी दौरान उनका परिचय सुभद्रा कुमारी चौहान से हुआ जो कालांतर में घनिष्ट मित्रता में परिणत हुआ । इनके सानिध्य ने महादेवी को सर्वदा प्रेरणा दी तथा उत्साहित किया । वर्ष 1932 में 25 वर्ष की आयु में इन्होंने संस्कृत विषय से एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। इस समय तक उनकी दो कृतियाँ ' निहार' एवं ' रश्मि' का प्रकाशन हो चुका था ।

क्या संयोग है महादेवी एवं उनके पति दोनों छात्र जीवन में ही परिणय सूत्र में बंध गये । शादी के उपरान्त इनके पति श्री स्वरूप नारायण वर्मा ने लखनऊ के मेडिकल कालेज में दाखिला लिया और डाक्टरी की पढ़ाई पूर्ण करके एक सक्षम चिकित्सक बने । महादेवी वर्मा का वैवाहिक जीवन विरक्ति भरा था, वैसे सामान्यतया इनका इनके पति के प्रति सामान्य व्यवहार रहा तथा इनके पति ने भी एक पत्नी धर्म का जीवनपर्यन्त पालन किया क्योंकि इन्होंने अपने पति को दूसरा विवाह करने की सलाह दी थी , परन्तु उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया ।

महादेवी ने आजीवन सन्यासिनी का जीवन व्यतीत किया । **वे जीवन भर श्वेत वस्त्र धारण करती रहीं तथा तख्त पर सोंई और तो और उन्होने कभी अपना चेहरा शीशे में नहीं देखा ।** वर्ष 1966 में इनके पति का स्वर्गवास हो गया और तब से स्थाई रूप से इन्होंने इलाहाबाद को ही स्थाई प्रवास बना लिया । श्री सुमित्रानन्दन पंत तथा निराला को इन्होंने मानस बन्धु के रूप में अंगीकार किया । निराला जी उनके अत्यधिक घनिष्ट थे, जिन्हें लगभग 40 वर्षो तक लगातार राखी बांधी ।

महादेवी वर्मा मुख्यतः लेखन, संपादन तथा अध्यापन के क्षेत्रों से जुड़ी रहीं । उन्होंने इलाहाबाद में प्रयाग महिला विद्यापीठ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया । महिला सशक्तिकरण का उनका यह प्रयास शिक्षा के क्षेत्र में मील का पत्थर है । इस संस्थान की

वे प्रधानाचार्या एवं बाद में कुलपति भी रही । वर्ष 1932 में इन्होंने महिलाओं की एकमात्र पत्रिका 'चाँद' के प्रकाशन का कार्यभार संभाला । इसके अतिरिक्त वर्ष 1930 में ' नीहार' , 1932 में 'रश्मि' , 1934 में ' नीरजा' तथा 1936 में ' सांध्यगीत' नामक चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए । वर्ष 1939 में इनका एकत्रित संग्रह 'यामा' नाम से प्रकाशित हुआ । काव्य, शिक्षा, चित्रकला, गद्य लेखन आदि अनेक क्षेत्रों में इनका योगदान सर्वदा स्मरणीय है । इन तमाम रचनाओं के अतिरिक्त इनके 18 काव्य तथा गद्य सृजन हैं, जिनमें ' मेरा परिवार' , ' स्मृति की रेखांए' , ' पथ के साथी' , ' श्रृखला की कड़ियाँ' और 'अतीत के चलचित्र' प्रमुख हैं ।

वर्ष 1955 में महादेवी वर्मा ने ' साहित्यकार-संसद ' तथा ' रंगवाणी नाट्य' नामक संस्थाओं की स्थापना कर भारत में महिला कवि समेलनों की नींव रखी । इस प्रकार भारत प्रथम महिला कवि सम्मेलनों की मंच की शुरूआत का श्रेय भी इन्हीं को जाता है । जब 15 अप्रैल 1933 को प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्रथम महिला कवि सम्मेलन का आयोजन कराया जिसकी अध्यक्षा महान कवियत्री सुभद्रा कुमारी चौहान थी ।

यह बहुत कम लोगों को ज्ञात है कि हिन्दी साहित्य की ' रहस्यवाद' या ' छायावाद ' की प्रवर्तिका मानी जाने वाली महादेवी वर्मा बौद्ध धर्म से बहुत ही प्रभावित थी तथा महात्मा गांधी से प्रेरणा लेकर स्वतंत्रता आंदोलन की विचारधारा से अभिभूत होकर इन्होंने जनसेवा का व्रत लिया तथा इलाहाबाद के ही समीप झूसी नामक स्थान में अपना योगदान दिया ।

महादेवी वर्मा ने नैनीताल से 25 किलोमीटर दूर रामगढ़ में एक बंगले का निर्माण कराया था जिसे उन्होंने ' मीरा मंदिर ' का नाम दिया था । यहाँ पर उन्होंने महिलाओं के उत्थान का कार्य किया । आजकल इस बंगले को महादेवी का संग्रहालय बना दिया गया है ।

नारी मुक्ति का उद्घोष कोई नया नहीं है । महादेवी की कृति ' श्रृंखला की कडियाँ ' में नारी मुक्ति बोध और विकास के उन्मुक्त साहसी स्वर के साथ दृढ़ता का परिचय मिलता है । यह उनका महिला मुक्तिवाद का स्वर था जिसमें महिलाओं एवं शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान की जनसेवा के फलस्वरूप उन्हें समाज सुधारक की भी संज्ञा दी गई । उनकी कृतियों में अदम्य रचनात्मक शेष की स्वर लहरी, सामजिक परिवर्तन के प्रति उनकी आकांक्षा तथा सतत् विकास के प्रति उनका अनुराग सर्वथा प्रशंसनीय है ।

आधुनिक गीत काव्य की प्रणेता महादेवी वर्मा का स्थान सर्वोपरि है । उनकी कविता में करूणा, प्रेम की पीर और भावों की तीव्रता अभूतपूर्व है, उनकी रचनाओं की भाषा, भाव तथा संगीत का पुट मानों प्रयाग, की गंगा , जमना सरस्वती की साहित्यिक त्रिवेणी है । साहित्य बोध की प्रवाहिनी का ऐसा अद्भुत संयोग विरला ही दिखाई देता है । इनकी गीतों

की वेदना, प्रणयानुभूति, करूणा और रहस्यवाद कवियों को युगों-युगों तक आकर्षित करती रहेगी । इनकी सृजनात्मकता के समालोचकों में प. रामचन्द्र शुक्ल का विचार कुछ अलग ही है । उनका मानना है कि महादेवी वर्मा की कृतियाँ वैयक्तिक हैं तथा बनावटी हैं । हालांकि पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य सत्य प्रकाश मिश्र उनके काव्यों को समष्टि परक मानते हैं तथा उनके छायावाद के स्वभाव, चरित्र स्वरूप और विशिष्टता के पक्ष प्रस्तुति स्वरूप उन्हें युग का सजग रचनाकार माना है । वर्ष 1943 में बंगाल के अकाल के समय उनके एक काव्य संकलन का प्रकाशन तथा वंग ' भू शत् वंदना' नामक कविता की रचना, वर्ष 1962 के चीन आक्रमण के प्रतिवाद स्वरूप 'हिमालय' नामक काव्य संग्रह का संपादन उनके युगबोध का प्रमाण प्रस्तुत करता है । वस्तुतः महादेवी की अनुभूति और सृजन का केन्द्र ' आंसू' नहीं 'आग' है । उनके दार्शनिक भाव की अनुभूति इसी बात से पता चल जाती है जिसके अनुसार वह मानती हैं कि जो दृश्य है वह अंतिम सत्य नहीं है जो अदृश्य है वह मूल या प्रेरक सत्य है । क्या यह पदार्थ और ऊर्जा के अविनाशी तथ संरक्षण सिद्धान्त का बोध नहीं ? मेरा यह विचार है कि महादेवी वर्मा ही हैं जिन्होंने गद्य में भी कविता के मर्मस्पर्शी भाव की अनुभूति कराई है । कितना विलक्षण संयोग है कि उन्होंने न तो उपन्यास लिखा, न कोई कहानी लिखी और न ही कोई नाटक, फिर भी उन्हें श्रेष्ठ गद्यकार माना गया । उनके गद्य लेखन में जहाँ एक ओर रेखाचित्र संस्मरण या फिर यात्रा वृतान्त हैं तो दूसरी ओर संपादकीय भूमिकाएं , निबंध और अभिभाषण आदि सब पहलुओं पर वैविध्य समाहित हो ।

छायावाद काव्य को जहाँ प्रसाद जी का प्रकृतिवाद, निराला का मुक्त छंद की अवतारण और डा. सुमित्रानन्दन पंत की सुकोमल कलात्मकाता प्राप्त हुई वहीं महादेवी वर्मा के छायावाद में उपरोक्त मूर्तवाद के कलेवर में प्राण-प्रतिष्ठा का गौरव प्राप्त हुआ । भाव पक्ष और अनुभूमति की गहनता उनके काव्य की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है । हृदय की सूक्ष्म तंरगित से तंगित तथा उद्वेलित सजीव काव्य सृजन की प्रणेता तथा वेबाक अभिव्यंजना की अलग पहचान बनाने वाली विदुषी महिला 11 सितम्बर 1987 को (सांय 9.30) सदा के लिए परलोक प्रस्थान कर गई और छोड़ गई एक सरोकार जो इस महिला नेत्री ने सामाजिक जीवन की गहराईयों, नारी जीवन के वैसम्य और शोषण के तीखेपन झाकने वाली इतनी जागरूक प्रतिभा की धनी और निम्न वर्ग के निरीह साधन हीन प्राणियों के अनूठे चित्रांकन की प्रथम साहित्यिक महिला युगों तक साहित्य के क्षितिज पर दैदिव्यमान होकर आने वाली पीढ़ियों को अपने गूढ़ प्रकाश से आलोकित करती रहेंगी । ऐसी साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक अभिव्यंजना की प्रणेता को हमारा उनके जन्म सदी वर्ष पर शत्-शत् - नमन् ।

महादेवी वर्मा को प्रशासनिक, अर्धप्रशासनिक एवं व्यक्तिगत संस्थाओं द्वारा अनेकों पुरस्कार प्राप्त हुए । सक्सेरिया पुरस्कार (1934) , द्विवेदी पदक (1942) के साथ-साथ 1943 मं उन्हें मंगला प्रसाद पुरस्कार, 'भारती-पुरस्कार' से सम्मानित किया गया । स्वतंत्रता के

पश्चात उ.प्र. की विधान परिषद की सदस्यता (1952) , पद्मभूषण, (1956) साहित्य अकादमी की प्रथम महिला सदस्य , (1979) , मरणोपरान्त पदम विभूषण (1988) , साथ ही साथ विक्रम विश्वविद्यालय (1969) , कुमाऊँ विश्वविद्यालय (1977) , दिल्ली विश्वविद्यालय (1980) तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (1984) , में डि.लिट से सम्मानित । इसके अतिरिक्त उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ । भारत की सर्वप्रसिद्ध 50 महिलाओं में उनका उल्लेख है । मरणोपरान्त 16 सितम्बर 1991 में उनके सम्मान में दो रूपये का जयशंकर प्रसाद के साथ डाक टिकट जारी किया गया ।

****